बौद्ध धर्म/मत

असि०प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम०कॉलेज, रक्सिका, मधुबनी
मो०- 8051796740
दिनांक - 03-04-2020

बौद्ध धर्म :—

संस्थापक - महात्मा बुद्ध
बचपन का नाम - सिद्धार्थ
अन्य नाम - तथागत, दंसपाल, शाक्यसिंह
जन्म स्थान - कपिलवस्तु के निकट ~~लुम्बिनी~~ लुम्बिनी वन (आधुनिक नाम - रुम्मिनदेई)
जन्म वर्ष - 563 ई० पू०
पिता का नाम - शुद्धोधन (शाक्य गण के प्रधान)
माता का नाम - मायादेवी (कौलिय गण)
लालन-पालन - प्रजापति गौतमी (विमाता या मौसी / माता की मृत्यु के बाद)
विवाह - 16 वर्ष की अल्पायु में शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से
यशोधरा का अन्य नाम - बिम्बा, गोपा, भद्दकच्छना (विभिन्न बौद्ध ग्रंथों में)
पुत्र प्राप्ति - राहुल
कपिलवस्तु भ्रमण के दौरान चार चिन्हों के दर्शन - ① वृद्ध ② व्याधिग्रस्त मनुष्य
③ मृतक ④ प्रसन्नचित सन्यासी

→ सांसारिकता से मोहभंग, तत्पश्चात् गृह त्याग की अभिलाषा —
गृह त्याग - २९ वर्ष की अवस्था में (
गृह त्याग की घटना - महाभिनिष्क्रमण
ज्ञान की खोज में भ्रमण → वैशाली → राजगृह → उरुवेला (बोधगया)
ज्ञान की प्राप्ति → 35 वर्ष की अवस्था में, उरुवेला (बोधगया), पीपल वृक्ष के नीचे, वैशाख पूर्णिमा के दिन
प्रथम ज्ञानोपदेश → ऋषिपत्तन (सारनाथ में),
प्रथम ज्ञानोपदेश को बौद्ध ग्रंथों में "धर्मचक्रप्रवर्तन" कहा गया।
प्रथम ज्ञानोपदेश दिया - पाँच ब्राह्मण सन्यासियों को
वे विद्वान जो महात्मा बुद्ध के शिष्य बने - सारिपुत्र, महामौद्गल्यायन, उपालि, आनन्द, देवदत्त, उरुवेल, अनिरुद्ध
वे शासक/श्रेष्ठी जो महात्मा बुद्ध के शिष्य बने - यस, भद्दिक, बोधिकुमार, उदयन, प्रद्योत, अनाथपिण्डक, प्रसेनजीत,
मृत्यु - 80 वर्ष की अवस्था में, 483 ई० पू० में,
मृत्यु स्थल - पावा (मल्लों की राजधानी)
मृत्यु की घटना - महापरिनिर्वाण (बौद्ध ग्रंथों में)

बौद्ध संगीति	ईस्वी	स्थल	संरक्षक	अध्यक्षता
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई० पू०	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)	अजातशत्रु	महाकस्सप
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई० पू०	वैशाली	कालाशोक	सावकमीर
तृतीय बौद्ध संगीति	252 ई० पू०	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स
चतुर्थ बौद्ध संगीति	1 Cen, AD.	कुण्डलवन कश्मीर	कनिष्क	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

→ द्वितीय बौद्ध संगीति के अवसर पर बौद्ध भिक्षु संघ दो सम्प्रदायों में बँट गया। ये हैं:-

① स्थविर या थेरवादी

② सर्वास्तवदिन या महासांघिक

→ चतुर्थ बौद्ध संगीति के अवसर पर बौद्ध भिक्षु संघ पुनः दो भागों में बँट गया। ये हैं:-

① ~~हीनयानी~~	① हीनयान
② महायानी	② महायान

→ बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है।

→ बौद्ध धर्म में जीवन का चरम लक्ष्य निर्वाण को माना गया है। निर्वाण का अर्थ होता है "दीपक का बुझ जाना" अर्थात् जीव जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति अर्थात् जरामरण के चक्र से मुक्ति।

→ बुद्ध ने "दस शील" का भी प्रतिपादन किया था ये हैं - दान, शील, सहनशीलता, प्रज्ञा, ध्यान, वीर्य, उपाय, प्रणिधान, बल तथा ज्ञान

→ बौद्ध साहित्य - विनय पिटक, सुत्त पिटक, अभिधम्म पिटक, दिव्यावदान, दीपवंश, महावंश, महावोधि वंश टीका, विभाषाशास्त्र,

बौद्ध धर्म/मत

असि०प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम०कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०- 8051796740
दिनांक - 04-04-2020

→ बौद्ध साहित्य — → मूल बौद्ध साहित्य
└ परवर्ती बौद्ध साहित्य

मूल बौद्ध साहित्य की भाषा — पाली भाषा

परवर्ती बौद्ध साहित्य की भाषा - संस्कृत तथा पाली भाषा

नोट: महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेश जनसाधारण की भाषा "पाली" में दिये थे।

→ प्रथम धर्मोपदेश धर्मचक्रप्रवर्तन में चार आर्य सत्य (चतारि अरिय सच्चानि) का उल्लेख है।

→ चार आर्य सत्य है — ① संसार में दुःख है ② दुःख का कारण है
③ दुःख से मुक्ति मिल सकती है ④ दुःख से मुक्ति के उपाय है।

→ दुःख से मुक्ति के उपाय के रूप में अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया गया।
ये अष्टांगिक मार्ग है :— ① सम्यक् दृष्टि ② सम्यक् संकल्प ③ सम्यक् वाक् ④ सम्यक् कर्मान्त
⑤ सम्यक् आजीविका ⑥ सम्यक् व्यायाम ⑦ सम्यक् स्मृति ⑧ सम्यक् समाधि

→ अष्टांगिक मार्ग को भी बुद्ध ने तीन उपाय (साधन), शील, समाधि तथा प्रज्ञा के अन्तर्गत समाहित किया है

शील — सम्यक् कर्मान्त, सम्यक आजीविका

समाधि — सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि

प्रज्ञा - सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्

→ सम्बोधि (बोध गया) में महात्मा बुद्ध को "प्रतीत्यसमुत्पाद" का बोध हुआ था।

→ "प्रतीत्य समुत्पाद" का अर्थ होता है "किसी कारण से किसी वस्तु की उत्पत्ति"। इसे "कार्य-कारण" सिद्धान्त के रूप में भी देखा जा सकता है। वास्तव में देखा जाए तो प्रतीत्यसमुत्पाद ही बुद्ध की समस्त उपदेशों का सार तथा उसकी तमाम शिक्षाओं का आधार स्तम्भ है।

→ बुद्ध ने अपने उपदेशों को मध्यम-मार्ग (मध्यम-प्रतिपदा) कहा है

→ बौद्ध धर्म में "विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक" को "त्रिपिटक" की संज्ञा दी गई है

→ बौद्ध धर्म में "बुद्ध, धम्म तथा संघ" को "त्रिरत्न" की संज्ञा दी गई है

→ द्वितीय प्रथम बौद्ध संगीति के अवसर पर बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन कर उसे दो भागों (पिटकों) में विभाजित किया गया - विनय पिटक, ~~अभि~~ सुत्त पिटक

→ तृतीय बौद्ध संगीति के अवसर पर बुद्ध की शिक्षाओं का नये सिरे से व्याख्या कर एक नये पिटक "अभिधम्म पिटक" की रचना की गई।

P.T.O